RNI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

GARVI GUJARAT

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 297
दि. 28.02.2026,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

धरती और मानव स्वास्थ्य बचाने का मजबूत विकल्प है प्राकृतिक खेती : राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी

▸▸ राज्यपाल ने सभी विधायकों का आह्वान किया कि वे उनके क्षेत्र के एक गाँव को 'प्राकृतिक गाँव' बनाएँ

▸▸ मुख्यमंत्री ने प्राकृतिक खेती को आज की तथा आगामी समय की जरूरत बताया

▸▸ 'पहेलुं सुख ते जात निरोगी' परंपरागत उक्ति के लिए प्राकृतिक खेती ही तारणोपाय है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ मानव जाति तथा प्रकृति की रक्षा के लिए प्राकृतिक खेती अपनाना अनिवार्य : विधानसभाध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी

▸▸ राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी की अध्यक्षता में गुजरात विधानसभा में प्राकृतिक कृषि परिसंवाद आयोजित हुआ

जीएनएस)। गांधीनगर : गुजरात विधानसभा में शुक्रवार को आयोजित प्राकृतिक कृषि परिसंवाद को संबोधित करते हुए राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी ने रासायनिक खेती के गंभीर परिणामों तथा प्राकृतिक खेती के फायदों के बारे में विस्तृत मार्गदर्शन दिया। राज्यपाल ने कहा कि प्राकृतिक खेती जैसे गंभीर विषय को आज विधानसभा में स्थान मिला है। यह आनंद की बात है। जैविक एवं प्राकृतिक खेती के बीच का अंतर बताते हुए उन्होंने कहा कि जैविक खेती में एक एकड़ के लिए 300 क्विंटल गोबर खाद की जरूरत पड़ती है। इसके विपरीत; प्राकृतिक खेती सूक्ष्म जीवों की खेती है। देसी गाय के एक ग्राम गोबर में 300 करोड़ से अधिक सूक्ष्म जीव होते हैं और गौमूत्र खनिजों का भंडार है। जीवामृत तथा घन जीवामृत द्वारा जमीन में केंचुओं और मित्र कीटकों की संख्या बढ़ती है, जो प्राकृतिक रूप से जमीन को उपजाऊ बनाते हैं। राज्यपाल ने चिंता व्यक्त की कि वर्षों पहले कैंसर, डाइबिटीज या हार्टअटैक जैसे रोगों की व्यापकता नहीं के बराबर थी, जबकि आज छोटे बच्चों में भी कैंसर पाया जाता है। उन्होंने उन रिसर्च रिपोर्ट्स का भी उल्लेख किया, जिनमें कहा गया है कि नवजात शिशु के लिए अमृत समान माता के दूध में भी अब यूरिया तथा कीटनाशक मिल रहे हैं।

भारत में हरित क्रांति के समय देश की धरती का ऑर्गेनिक कार्बन 2 से 2.5 प्रतिशत था, जो आज घटकर 0.5 प्रतिशत से भी नीचे चला गया है। राज्यपाल ने इस पर चिंता जताते हुए कहा कि जिस जमीन का ऑर्गेनिक कार्बन 0.5 प्रतिशत से नीचे चला जाता है, वह जमीन बंजर कहलाती है। गुजरात में रासायनिक खेती वाली जमीन का ऑर्गेनिक कार्बन 0.5 प्रतिशत से नीचे पहुँच चुका है, जिसके परिणामस्वरूप जमीन कठोर हो जाने के कारण वर्षा जल जमीन में नहीं उतरता और बाढ़ की स्थिति पैदा होती है। राज्यपाल ने जोड़ा कि प्राकृतिक खेती में केंचुए जमीन में प्राकृतिक रूप से छिद्र बनाते हैं, जिसके चलते जमीन में वर्षा जल संग्रह होता है।

राज्यपाल ने कहा कि यूरिया-डीएपी की सब्सिडी पर देश के करोड़ों रुपए बरबाद किए जाते हैं। यदि प्राकृतिक खेती अपनाई जाए, तो यह खर्च बच सकता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में समग्र देश में राष्ट्रीय प्राकृतिक कृषि मिशन लागू हुआ है। राज्य सरकार के प्रयासों से गुजरात में हाल में 8 लाख से अधिक किसानों ने प्राकृतिक कृषि अपनाई है।

राज्यपाल ने कहा कि यह जरूरी है कि किसान शुरुआत में अपने खेत के एक

भाग में प्राकृतिक खेती करें। इसके अलावा; राज्यपाल ने विधानसभा के सभी सदस्यों का आह्वान किया कि वे अपने क्षेत्र के एक गाँव को 'प्राकृतिक गाँव' अवश्य बनाएँ।

राज्यपाल ने जल, जमीन, पर्यावरण एवं मानव स्वास्थ्य बचाने के लिए प्राकृतिक खेती को अनिवार्य बताते हुए कहा कि गुजरात सरकार के सहयोग से यह मिशन अब जन आंदोलन बन चुका है। यदि हमें आने वाली पीढ़ी को कैंसर जैसे घातक रोगों से बचाना है और किसानों की आय दुगुनी करनी है, तो प्राकृतिक खेती के अलावा और कोई विकल्प नहीं है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने प्राकृतिक खेती को आज के और आने वाले समय; दोनों की अनिवार्यता बताते हुए कहा कि 'पहेलुं सुख ते जात निरोगी (पहला सुख निरोगी काया)'; इस परंपरागत उक्ति के लिए प्राकृतिक खेती तारणोपाय है। इस संदर्भ में मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए 'बैक टु बेसिक' मंत्र की भूमिका देते हुए जोड़ा कि प्रधानमंत्री ने इस मंत्र द्वारा केवल प्राकृतिक खेती के ही नहीं, बल्कि मानव जीवन के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक सभी स्रोतों के संवर्धन का मार्ग भी बताया है। मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री द्वारा पानी की समस्या के निवारण के लिए कैच दे रेन, ग्लोबल वॉर्मिंग की चुनौतियों से निपटने एवं ग्रीन कवर बढ़ाने के लिए एक पेड़ माँ के नाम और स्वस्थता के लिए रसायनमुक्त खेती के दिए गए अभियानों को व्यापक रूप से अपनाने का आह्वान किया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुजरात में राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी की प्रेरणा एवं सघन मार्गदर्शन से प्राकृतिक खेती के जन आंदोलन बनने पर हर्ष व्यक्त किया। श्री पटेल ने प्राकृतिक खेती अपनाने वाले किसानों के इस कार्य को भावी पीढ़ी को स्वस्थ रखने का आत्मसंतोषपूर्ण कार्य बताया और विश्वास व्यक्त किया कि प्राकृतिक खेती का यह परिसंवाद अधिक से अधिक किसानों को प्राकृतिक खेती की ओर मुड़ने के लिए प्रेरित करेगा।

इससे पहले गुजरात विधानसभा के अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि जीवन जीने के लिए अत्यावश्यक हवा एवं पानी को शुद्ध रखने के लिए 'प्राकृतिक कृषि' को अधिक से अधिक प्राथमिकता देना आवश्यक है और राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी गुजरात की जनता के लिए निरंतर संवेदनशीलतापूर्वक यह कार्य कर रहे हैं। श्री चौधरी ने कहा कि गुजरात ने पूज्य महात्मा गांधी तथा सरदार साहब के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व किया है, जबकि आज सुशासन से देश एवं विश्व को दिशा देने का कार्य प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह कर रहे हैं।

विधानसभाध्यक्ष ने कहा कि राज्यपाल स्वयं गाँव-गाँव किसानों के बीच जाकर प्राकृतिक कृषि के फायदे बता रहे हैं। उन्होंने जोड़ा कि इस वर्ष गुजरात सरकार ने प्राकृतिक कृषि संबंधी बजट में भी बहुत बड़ी घोषणा की है। हमें प्रयास करना होगा कि यह कार्य केवल सरकार का न रहे, बल्कि विधानसभा के माध्यम से भी गुजरात के सुदूरवर्ती नागरिक तक पहुँचे।

अंत में आभार व्यक्त करते हुए कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी ने कहा कि गुजरात विधानसभा में इस प्रकार के प्राकृतिक कृषि संबंधी परिसंवाद का आयोजन होना समग्र गुजरात के लिए गौरव की बात है। प्राकृतिक कृषि के ऋषि और गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी ने इस परिसंवाद के माध्यम से सभी को बहुत सरल भाषा में प्राकृतिक कृषि संबंधी मार्गदर्शन प्रदान किया है।

श्री वाघाणी ने सदन के सभी सदस्यों से अनुरोध करते हुए कहा कि प्राकृतिक कृषि आज के समय में मानव जीवन के लिए सबसे संवेदनशील मुद्दा है। अतः सभी जन प्रतिनिधियों को भी अपने क्षेत्र में निजी रुचि लेकर प्राकृतिक कृषि के लिए किसानों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

इस अवसर पर संसदीय मामलों के मंत्री श्री ऋषिकेशभाई पटेल, विधानसभा उपाध्यक्ष श्री पूर्णेशभाई मोदी, मंत्रिमंडल के अन्य सदस्य, सांसद, विधायक, विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष, पूर्व उपाध्यक्ष, पूर्व सांसद, पूर्व विधायक, विश्वविद्यालयों के कुलपति, वैज्ञानिक, साहित्यकार, मीडिया क्षेत्र के संपादक व प्रतिनिधि तथा प्राकृतिक खेती करने वाले किसान उपस्थित रहे।

सेमीकंडक्टर की चिप बनाने के लिए अत्यंत स्वच्छ रूम जरूरी, साणंद में माइक्रोन का क्लीनरूम विश्व के सबसे बड़े क्लीनरूम की सूची में शामिल

▸▸ साणंद प्लांट के प्रथम फेज में निर्मित क्लीनरूम का क्षेत्र 5 लाख वर्ग फीट, एफिल टावर से साढ़े तीन गुना अधिक स्टील का उपयोग : संजय मेहरोत्रा, अध्यक्ष एवं सीईओ, माइक्रोन टेक्नोलॉजी

▸▸ ऑपरेशन थियेटर से भी अधिक स्वच्छ होता है क्लीनरूम, एक छोटे कण या तापमान में 1 डिग्री के परिवर्तन से भी मशीन का कार्य ठप हो सकता है

जीएनएस)। गांधीनगर : सेमीकंडक्टर चिप की उत्पादन प्रक्रिया में क्लीनरूम महत्वपूर्ण होता है। चिप के उत्पादन में वातावरण का पूर्णतः स्वच्छ होना जरूरी है, कारण कि हवा में मौजूद अत्यंत छोटे कण भी चिप में घुसकर नुकसान पहुँचा सकते हैं। चिकित्सा उपकरणों, दवाइयों तथा सेमीकंडक्टर के उत्पादों के लिए क्लीनरूम बनाया जाता है। साणंद में माइक्रोन कंपनी द्वारा बनाया गया क्लीनरूम विश्व के सबसे बड़े क्लीनरूम की सूची में शामिल हो गया है।

माइक्रोन टेक्नोलॉजी के अध्यक्ष एवं सीईओ संजय मेहरोत्रा के अनुसार माइक्रोन के साणंद प्लांट में प्रथम फेज में 5 लाख वर्ग फीट क्षेत्र में क्लीनरूम का निर्माण किया गया है, जिसमें एफिल टावर से साढ़े तीन गुना अधिक लोहे तथा ओलंपिक आकार के 100 स्विमिंग पूल जितने कंक्रीट का उपयोग किया गया है।

मोदी सरकार ने मजबूत सहयोग दिया, निवेश के लिए प्रोत्साहित किया : संजय मेहरोत्रा

उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने हमें मजबूत सहयोग दिया है और कंपनियों को भारत में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करने वाली नीतियाँ बनाई हैं। साणंद का प्रोजेक्ट भारत में एक अग्रणी प्रोजेक्ट है तथा केन्द्र व गुजरात सरकार के साथ भागीदारी में कार्य करने का हमें गर्व है।

क्लीनरूम की हवा कई बार ऑपरेशन थियेटर से भी अधिक स्वच्छ

माइक्रोन टीम द्वारा बताया गया कि साणंद के माइक्रोन प्लांट में अंतरराष्ट्रीय मानदंडों के अनुसार विशाल क्लीनरूम बनाया गया है। इस क्लीनरूम में मौजूद हवा कई बार ऑपरेशन थियेटर से भी अधिक स्वच्छ होती है। यहाँ एक बाल भी चिप को नुकसान पहुँचा सकता है। इस कारण उसे अत्यंत स्वच्छ रखना जरूरी है।

क्लीनरूम को स्वच्छ रखने के लिए फिल्टर्ड हवा को ऊपर से नीचे (वर्टिकली) समान मात्रा में भेजा जाता है। यह हवा अस्त-व्यस्त नहीं होती है और एक समान लय में प्रवाहित होती है। क्लीनरूम का नीचे वाला फ्लोर भी जमीन की सतह से थोड़ा ऊँचाई पर बनाया हुआ होता है, जिसके नीचे हवा गुजरती है और कूलिंग, पावर तथा डेटा का कार्य चलता रहता है। क्लीनरूम में तापमान में लगभग एक डिग्री का फर्क पड़े, तो भी मशीन के कार्य में वह विक्षेप पहुँचा सकता है। इसलिए तापमान को निरंतर अत्यंत सूक्ष्म स्तर तक नियंत्रित किया जाता है, कारण कि मेमोरी टेस्टर मशीनों से तापमान में बड़े पैमाने पर वृद्धि होती है। एक सूक्ष्म कण भी अगर चिप में प्रवेश कर जाए, तो वर्षों बाद भी वह प्रोडक्ट में नुकसान पैदा कर सकता है। यहाँ पावर, कूलिंग तथा हवा के लिए पर्याप्त बैकअप प्रणाली रखी गई है, जिससे किसी एक सिस्टम में कोई विक्षेप हो, तो कामकाज पूर्ववत रखा जा सके। माइक्रोन के वैश्विक गोल्ड स्टैंडर्ड के अनुसार इस क्लीनरूम को भारत में डिजाइन किया गया है। इस प्लांट के शुभारंभ से भारत सेमीकंडक्टर क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर मजबूत दावेदारी दर्ज कराएगा। कंपनी 2019 से भारत में कार्यरत है। बेंगलुरु तथा हैदराबाद में कंपनी के रिसर्च एवं डेवलपमेंट केन्द्र सक्रिय हैं। हाल में माइक्रोन भारत में लगभग 24,000 लोगों को रोजगार देता है। भारत में कार्यरत कर्मचारी कंपनी के वैश्विक इनोवेशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कंपनी के कुछ सर्वाधिक अत्याधुनिक डीआरएएम मेमोरी उत्पाद अमेरिका की टीमों के सहयोग से भारत में डिजाइन किए गए हैं।

साबरमती-दानापुर के मध्य होली स्पेशल ट्रेन का संचालन

जीएनएस)। आगामी होली पर्व के दौरान यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को ध्यान में रखते हुए तथा उनकी सुविधा के लिए पश्चिम रेलवे द्वारा साबरमती एवं दानापुर के मध्य विशेष किराये पर होली स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है। विवरण निम्नानुसार है:

ट्रेन संख्या 09427/09428 साबरमती–दानापुर–साबरमती स्पेशल (विशेष किराये पर) (02 ट्रिप)

ट्रेन संख्या 09427 (साबरमती–दानापुर स्पेशल)

दिनांक 01 मार्च, 2026 (रविवार) को साबरमती से प्रातः 08.50 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन (सोमवार) 17.30 बजे दानापुर पहुँचेगी।

ट्रेन संख्या 09428 (दानापुर–साबरमती स्पेशल)

दिनांक 02 मार्च, 2026 (सोमवार) को दानापुर से रात्रि 22.40 बजे प्रस्थान करेगी तथा तीसरे दिन (बुधवार) प्रातः 06.45 बजे साबरमती पहुँचेगी।

मार्ग एवं ठहराव

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में महेसाणा, पालनपुर, आबू रोड, मारवाड़ जंक्शन, अजमेर, जयपुर, दौसा, भरतपुर, टूंडला, इटावा, कानपुर सेंट्रल, प्रयागराज, मिर्जापुर, पं. दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन, बक्सर एवं आरा स्टेशनों पर ठहरेगी।

आरक्षण

ट्रेन संख्या 09427 की बुकिंग तत्काल प्रभाव से सभी यात्री आरक्षण केन्द्रों तथा आईआरसीटीसी की अधिकृत वेबसाइट पर प्रारंभ कर दी गई है। यात्रियों से अनुरोध है कि वे ट्रेन के परिचालन समय, ठहराव एवं संरचना संबंधी विस्तृत जानकारी के लिए भारतीय रेलवे की अधिकृत वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in का अवलोकन करें।

सूरत नगर निगम में भ्रष्टाचार का अड्डा: विपुल गणेशवाला विवाद

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। सूरत नगर निगम, जो भ्रष्टाचार का गढ़ बन चुका है, के अधिकारी या पदाधिकारी अपनी मनमानी नीतियों के बल पर शासन करते हुए भ्रष्टाचारियों को खुली छूट दे देते हैं। इसका एक उदाहरण यह है कि 15 लाख रुपये की लंबी रिश्वत मांगने के बाद विपुल गणेशवाला जैसे पत्रकार को 4 लाख रुपये लेकर भागने का मौका मिल जाता है। यहां हमें कार्यकारी अभियंता विपुल गणेशवाला की बात करनी होगी, जो हाल ही में रिश्वतखोरी के जाल में फंसकर बच निकले, और उनके बिचौलिए गणेशवाला की, जो पत्रकार लाइसेंस लेकर लिंबायत जोन में काम कर रहे थे। गणेशवाला के कार्यकाल के दौरान लिंबायत जोन में कई बाजार निर्माण अवैध रूप से किए गए। लिंबायत जोन में ही 100 से अधिक बाजार निर्माण एसएमसी की नीतियों और नियमों का उल्लंघन करते हुए और योजना के विरुद्ध बनाए गए हैं। निलंबित कार्यकारी अभियंता गणेशवाला ने 3-4 मंजिला मकानों के निर्माण के संबंध में नोटिस भी जारी किए और उन्हें निर्माण जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। लिंबायत जोन में अवैध रूप से बनी हुई दुकानों को गिराते समय सूरत नगर निगम के अधिकारियों के हाथ क्यों कांप रहे हैं? इन दुकानों की सड़कों पर कपड़े की बोरियां बिछाकर बनाए गए दबाव के कारण छोटी से छोटी गाड़ियों को भी चलने में दिक्कत हो रही है। कार्यकारी अभियंता विपुल गणेशवाला को ऐसी अवैध रूप से बनी इमारतों को गिराने से कौन रोक रहा था? साथ ही, अगर निर्माण स्वीकृत योजना और नियमों के विरुद्ध किया गया था, तो शहर के हित में ऐसी अवैध इमारतों को गिराने से गणेशवाला को कौन रोक रहा था? सिर्फ नोटिस देने से अवैध इमारतों की स्थिति में कोई फर्क नहीं पड़ता। सालों पहले जब अवैध इमारतें बनी थीं, तब भी गणेशवाला जैसा कोई व्यक्ति जरूर रहा होगा? गणेशवाला ने लिंबायत जोन के निर्माण क्षेत्र में हलचल मचा दी थी, चाहे वह छोटा हो या बड़ा। गणेशवाला ने अपने चार साल के कार्यकाल में कोई भी निर्माण नहीं छोड़ा, चाहे वह स्वीकृत योजना के अनुसार हो या उसके विरुद्ध। बड़ा सवाल यह है कि इस क्षेत्र के पार्षद भी इससे नाराज क्यों हो गए?

शून्य त्रुटि विज्ञापन,अगर सूरत नगर निगम

सफाई कर्मचारियों से लेकर आम कर्मचारियों तक, अन्य कर्मचारियों को अतीत और वर्तमान में एक सामान्य छुट्टी जैसे अपराध के लिए घर का दरवाजा दिखा रहा है , तो विपुल गणेशवाला को घर का दरवाजा दिखाने में सूरत नगर निगम क्यों हिचकिचा रहा है? विपुल गणेशवाला एक भ्रष्ट और मनमानी करने वाला कार्यकारी अभियंता है और इस बात के पर्याप्त सबूत हैं कि उसकी संपत्ति उसकी आय से अधिक है, फिर भी उसे आज तक कानूनी रूप से नौकरी से बर्खास्त क्यों नहीं किया गया है? यह सवाल चर्चा के दलदल में खोता जा रहा है।

मलाड में फलों पर जहर छिड़कते विक्रेताओं को पकड़े जाने पर जनता का आक्रोश फूट पड़ा

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। मुंबई के मलाड में फल विक्रेताओं द्वारा फलों पर चूहे मारने की दवा छिड़कने का एक चौंकाने वाला वीडियो कल सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। इसके आधार पर मलाड पुलिस ने मनोज केसरवानी और बिपिन केसरवानी नाम के दो फल विक्रेताओं को गिरफ्तार किया। दोनों आरोपी कई सालों से स्थानीय बाजार में फल बेचते आ रहे हैं। फिर, पूरा मामला तब सामने आया जब एक स्थानीय निवासी ने आरोपियों द्वारा फलों पर रैटोल नामक जहर छिड़कते हुए वीडियो को सोशल मीडिया पर पोस्ट किया। पूछताछ के दौरान, आरोपियों ने स्वीकार किया कि वे चूहों से होने वाले नुकसान से बचने के लिए रात में सेब और अनार जैसे फलों पर रैटोल छिड़कते थे। रैटोल में मौजूद पीला फास्फोरस मानव शरीर के लिए घातक साबित हो सकता है।

शून्य त्रुटि एजेंसी

पुलिस पूछताछ के दौरान आरोपियों ने कबूल किया कि वे रात में चूहों से फलों को होने वाले नुकसान से बचाने के लिए फलों पर रैटोल नामक चूहे मारने की दवा लगाते थे। पिछले मंगलवार की रात, कुछ सतर्क नागरिकों ने आरोपियों को फलों पर पीले रंग का क्रीम जैसा पदार्थ लगाते हुए रंगे हाथों पकड़ लिया। पहले तो आरोपियों ने बात टालने की कोशिश की, लेकिन कड़ी पूछताछ के बाद उन्होंने अपना जुर्म कबूल कर लिया। इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होते ही लोगों में भारी आक्रोश फैल गया। खुले बाजार में बिकने वाले फलों की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल उठने लगे। कुछ विशेषज्ञों के अनुसार, रैटोल में पीले फास्फोरस जैसे अत्यधिक विषैले रसायन होते हैं, जो मानव शरीर के लिए घातक साबित हो सकते हैं। यह विष रक्त में प्रवेश कर सकता है और शरीर में पहुँचते ही गंभीर नुकसान पहुंचा सकता है। विशेष चिंता की बात यह है कि यदि ऐसा विषैला पदार्थ फल की त्वचा में समा जाए, तो केवल पानी से धोने से इसका प्रभाव पूरी तरह से दूर नहीं होता। छोटे बच्चे अक्सर फलों को ठीक से धोए या छीले बिना ही खा लेते हैं। इससे जोखिम बढ़ जाता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने लोगों को सलाह दी है कि फलों को कम से कम 20 मिनट के लिए नमक मिले गुनगुने पानी में भिगोकर रखें और यदि संभव हो तो छीलकर ही खाएं।

बच्चों के लिए सुरक्षित हो एआई का उपयोग

बच्चों और किशोरों में एआई का इस्तेमाल तेजी से बढ़ा है लेकिन इसके अपने जोखिम भी हैं। हालांकि यह उन्हें ज्ञान-विज्ञान सभी कुछ दे सकता है। ऐसे में नियंत्रित उपयोग बेहतर है। एआई डिजाइनिंग, टूल्स के इस्तेमाल और संचालन में सुरक्षा सुनिश्चित होनी चाहिये।

इस सदी में हमने जिस तकनीकी उत्पाद का अभूतपूर्व विकास देखा वह है मोबाइल फोन। भारत आज दुनिया का सबसे बड़ा मोबाइल फोन उत्पादक ही नहीं बल्कि सबसे ज्यादा लोगों के पास इसके होने का गौरव रखता है। भारत में सस्ते स्मार्टफोन के आगमन और दुनिया की तीसरी सबसे सस्ती इंटरनेट सेवा होने के कारण घर-घर में कई-कई मोबाइल फोन दिखते हैं। लेकिन यहीं पर समस्या है और वह यह है कि नन्हे बच्चे जो कल तक खिलौनों से खेलते थे, आज मोबाइल फोन से चिपके हैं। मां-बाप बच्चों से पीछा छुड़ाने के लिए उन्हें स्मार्टफोन पकड़ा देते हैं।

लाखों बच्चे तो ऐसे हैं जो फोन हाथ में लिये बिना खाना नहीं खाते या फिर हंसते-गाते नहीं। वे वर्चुअल वर्ल्ड से इतना जुड़ गये हैं कि उसके अलावा कुछ सोच नहीं पा रहे। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई की धमाकेदार एंट्री के बाद हालात और बदल गये। यह एक आधुनिक और तत्काल रिजल्ट देने वाली तकनीक है जिसके पास अपार संभावनाएं हैं। यह काफी कुछ कर सकता है, पलक झपकते ही आपके प्रश्नों का जवाब दे सकता है, लेख लिख सकता है व ड्राइंग भी बना सकता है। यानी यह सब कुछ कर सकता है जो एक बच्चा चाहेगा। और यहीं गंभीर समस्या आ सकती है। उस बच्चे को कैसे यह समझ में आयेगा कि क्या सही है और क्या गलत?

इंटरनेट ने बच्चों को उम्र से पहले परिपक्व बनाना शुरू कर दिया है। अब एआई की बारी है जो उन्हें वहां पहुंचा सकती है जिसके बारे में हमने सोचा तक नहीं। हाल में आयोजित एआई शिखर सम्मेलन के दौरान फिक्की-यूनिसेफ की संयुक्त कार्यशाला में भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार प्रो. अजय सूद ने कहा कि भारत में डिजिटल पैठ

तेजी से बढ़ रही है और बच्चे एआई संचालित प्लेटफॉर्म्स की ओर खिंचे जा रहे हैं। अब जरूरी है कि एक समग्र और सशक्तीकरण करने योग्य फ्रेमवर्क तैयार किया जाये ताकि बच्चों का समुचित विकास हो। एआई अब सीखने के पैटर्न को एक आकार दे रहा है। हमें देखना होगा कि बच्चे क्या सूचना पाना चाहते हैं और एआई इस्तेमाल करने के बाद उनका व्यवहार कैसा रहता है। इस पर सभी भागीदारों यानी अभिभावकों, स्कूलों, शिक्षकों वगैरह को ध्यान देना होगा। यह भी देखना होगा कि जो बच्चे एआई की मदद से पढ़ाई कर रहे हैं या करेंगे उनका दीर्घकालीन विकास कैसा होता है। बच्चों के विकास पर समय के साथ एआई का क्या प्रभाव पड़ता है उसका अध्ययन करना होगा।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को दोधारी तलवार यूं ही नहीं कहा जा रहा। अगर यह बच्चों के विकास में बहुत बड़ा सहयोगी बनता है तो साथ ही उन्हें नुकसान भी पहुंचा सकता है। इसलिए जरूरी है कि इसके जोखिमों को समझा जाये और उसकी धार कुंद की जाये। यह किस तरह के अवसर प्रदान करता है उन्हें भी देखना होगा। यह भी कि बच्चों की एआई तक पहुंच कितनी हो। यह भी जान लेना जरूरी है कि एआई पर अत्यधिक निर्भरता बच्चों के स्वतंत्र रूप से सोचने की ताकत और सरल बुद्धिमत्ता को कमजोर न कर दे। देश में इसके लिए कई तरह की पहल की हैं ताकि एआई पर लगाम लगाई जा सके। लेकिन केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स एवं आईटी सचिव एस कृष्णा का मानना है कि इसी को देखते हुए एआई इंपैक्ट समिट आयोजित किया गया था। इसका थीम यही तो है कि मानव जाति, पृथ्वी और विकास के लिए एआई का लाभ उठाया जा सके। अगली पीढ़ी के पास व्यापक आधार वाली टेक्नोलॉजी हो ताकि विकास की श्रृंखला बन सके। उन्होंने यह भी कहा कि एआई को भय की दृष्टि से देखने की जरूरत नहीं बल्कि यह सोचकर इसे देखना-परखना चाहिए कि यह बच्चों के भविष्य में बदलाव ला सके। लेकिन यह भी कहा कि शासन द्वारा ऐसा मेकेनिज्म तैयार करना चाहिए जिससे बच्चों के भविष्य में बदलाव हो सके। जिससे उन्हें कई तरह के अवसर मिलते रहें ताकि उनका और विश्व का भविष्य संवरे। एआई अब चूंकि शिक्षा, स्वास्थ्य के अलावा खेलकूद में भी तेजी से आ रहा है और बच्चों की दुनिया बदल रहा है। बच्चों की परफॉर्मेंस भी वही सेट करने लगा है। भारत के एडटेक इंडस्ट्री के लिए यह एक वरदान साबित हो रहा है और आधुनिकतम शिक्षा प्रदान कर रहा है। एआई दुनिया भर के बच्चों को जोड़ रहा है। यहां पर कई सवाल भी खड़े हो रहे हैं क्योंकि हर देश दूसरे से अलग है और उसकी परंपराएं-संस्कार अलग हैं। ऐसे में बच्चों को सही मार्गदर्शन की जरूरत है। वे गलत राह न जायें, इसकी भी व्यवस्था करनी होगी। दुनिया के 184 देशों के 54,000 बच्चों और किशोरों की एक सर्वे रिपोर्ट में कहा गया है कि एआई डिजाइनिंग, उनके इस्तेमाल और संचालन में बच्चों को केन्द्र में रखना चाहिए। ऐसा करना इसलिए भी जरूरी है कि इससे तेजी से विकसित हो रहे एआई टूल्स को नियंत्रित किया जा सके जो युवा पीढ़ी खासकर बच्चों के लिए हानिकारक है। बच्चों और किशोरों की इस मामले में उपेक्षा एक सुरक्षित प्रणाली और व्यवस्था तैयार करने में बाधा पहुंचायेगी। रिपोर्ट में कहा गया है कि सरकारों को एआई को मॉनिटर करने वाले संगठनों या विभागों को मजबूत करना चाहिए चाहे वे प्राइवेट सेक्टर में क्यों न हो। इनके सदस्यों को बच्चों के अधिकारों, शिक्षा, डेटा सुरक्षा वगैरह में सिद्धहस्त होना चाहिए ताकि वे आसानी से अपनी भूमिका निभा सकें।

संपादकीय

रंगों में धुलती सच्चाई, कालिख में चमकती नेतागिरी

होली का दिन था। हवा में अबीर-गुलाल की खुशबू थी, गलियों में ढोलक की थाप थी, और लोगों के चेहरों पर रंगों की शरारत। हर कोई इस इंतजार में था कि किसे रंगा जाए और किससे बचा जाए। लेकिन इस बार मोहल्ले के लोगों का खास निशाना थे नेताजी। नेताजी, जो हर मौसम में रंग बदलने की अद्भुत कला रखते थे, आज खुद रंगों के घेरे में थे। लोगों ने सोचा था कि आज उन्हें रंगों से सराबोर कर देंगे, लेकिन जैसे ही वे उनके पास पहुंचे, उनके कदम अपने-आप रुक गए। नेताजी का चेहरा पहले से ही रंगा हुआ था। यह कोई गुलाल या अबीर का रंग नहीं था, बल्कि वह कालिख थी जो सालों की करतूतों, वादों और अधूरे सपनों की परतों से बनी थी। वह कालिख इतनी गहरी थी कि उस पर कोई और रंग चढ़ने की गुंजाइश ही नहीं बची थी। लोग एक-दूसरे का चेहरा देखने लगे। किसी ने धीमे से कहा, "अब इस पर क्या रंग लगाएं?" दूसरे ने जवाब दिया, "यह तो पहले से ही रंगों का संग्रहालय बना हुआ है।" फिर किसी के मन में विचार आया कि चेहरा छोड़ो, सफेद कुर्ता ही सही। नेताजी का कुर्ता हमेशा की तरह झक सफेद था, जैसे ईमानदारी का प्रतीक हो। लेकिन सब जानते थे कि यह सफेदी केवल ऊपर-ऊपर थी, भीतर का सच कुछ और था। लोगों ने सोचा, कीचड़ ही डाल देते हैं। कीचड़ का रंग सच्चाई के ज्यादा करीब होता है। जैसे ही किसी ने कीचड़ उठाया, नेताजी मुस्कुरा दिए। वह मुस्कान किसी साधारण इंसान की मुस्कान नहीं थी, बल्कि उस खिलाड़ी की मुस्कान थी जिसे खेल के सारे नियम पता हों। नेताजी ने बिना झिझक अपने हाथ फैला दिए और बोले, "लगाओ भाई, होली है। बुरा नहीं मानेंगे।" यह सुनकर लोगों का उत्साह और भी ठंडा पड़ गया। मजा तो तब आता है जब सामने वाला बचने की कोशिश करे, जब वह विरोध करे, जब उसे रंगने में संघर्ष हो। यहां तो नेताजी खुद ही रंगों का स्वागत कर रहे थे। यह स्वागत नहीं, बल्कि एक चुनौती थी।

एक युवक ने हिम्मत करके उनके कुर्ते पर कीचड़ फेंका। कीचड़ का दाग कुर्ते पर पड़ा, लेकिन नेताजी के चेहरे की मुस्कान जरा भी नहीं बदली। वह दाग भी जैसे उनके व्यक्तित्व का हिस्सा बन गया। उन्होंने कहा, "देखो, दाग से डरना नहीं चाहिए। दाग तो अनुभव के तमगे होते हैं।" यह सुनकर कुछ लोग हंस पड़े, कुछ चुप हो गए, और कुछ के मन में सवाल उठने लगे कि आखिर यह कैसी बेशर्मी है। नेताजी धीरे-धीरे आगे बढ़े और एक थाली उठाई, जिसमें काला रंग भरा हुआ था। उन्होंने कहा, "अब मेरी बारी है।" लोगों को लगा कि वह मजाक कर रहे हैं, लेकिन अगले ही पल उन्होंने रंग उठाकर सामने खड़े युवक के चेहरे पर पोत दिया। युवक कुछ समझ पाता, उससे पहले उसका चेहरा कालिख से भर चुका था। आसपास खड़े लोग चौंक गए। नेताजी ठहाका लगाकर हंसने लगे। उनकी हंसी में आत्मविश्वास था, अनुभव था, और एक अजीब-सी विजय की भावना थी। उन्होंने कहा, "होली में रंग तो दोनों तरफ से लगता है।" यह सुनकर लोग समझ गए कि यह केवल रंगों का खेल नहीं है, यह सत्ता का खेल है। यहां जो रंग लगाने आता है, वही रंगा जाता है। हर साल यही होता था। लोग सोचते थे कि इस बार नेताजी को रंग देंगे, उन्हें आईना दिखाएंगे, लेकिन हर बार वही रंगे जाते थे। नेताजी की कालिख कभी कम नहीं होती थी, बल्कि हर साल और गहरी हो जाती थी। वह कालिख उनके लिए शर्म का नहीं, बल्कि ढाल का काम करती थी। जितनी ज्यादा कालिख, उतनी ज्यादा सुरक्षा। नेताजी जानते थे कि रंगों का असली मतलब क्या है। रंग केवल खुशी का प्रतीक नहीं होते, वे सच्चाई को छिपाने का माध्यम भी बन सकते हैं। सफेद रंग पवित्रता का प्रतीक होता है, लेकिन अगर वह केवल दिखावे के लिए हो, तो उसका कोई अर्थ नहीं रह जाता। काला रंग अंधकार का प्रतीक होता है, लेकिन अगर कोई उसे अपनाकर जीना सीख जाए, तो वही उसका सबसे बड़ा हथियार बन जाता है। लोग धीरे-धीरे वहां से हटने लगे। उनके हाथों में रंग था, लेकिन मन में निराशा। उन्होंने सोचा था कि आज नेताजी को रंगकर संतोष मिलेगा, लेकिन हुआ इसका उल्टा। नेताजी ने ही उन्हें रंग दिया था। यह रंग केवल चेहरे पर नहीं, बल्कि उनके आत्मसम्मान पर लगा था। नेताजी वहीं खड़े रहे, अपने कुर्ते पर लगे कीचड़ को देखते हुए। उन्होंने उसे साफ करने की कोई कोशिश नहीं की। शायद उन्हें पता था कि यह कीचड़ भी कुछ समय बाद सूख जाएगा और फिर कोई नया कुर्ता पहन लिया जाएगा। लेकिन जो कालिख उन्होंने दूसरों पर लगाई थी, वह इतनी आसानी से नहीं छूटेगी।

प्रेरणा

जब कर्म जागा, तभी आशीर्वाद फला

प्राचीन समय की बात है। एक नगर में एक व्यक्ति रहता था, जिसके मन में हमेशा एक ही इच्छा पलती थी—वह संपन्न बनना चाहता था। वह अपने जीवन की कठिनाइयों से थक चुका था और चाहता था कि कोई चमत्कार हो जाए, कोई दिव्य शक्ति उसे आशीर्वाद दे दे और उसका जीवन सुख-संपत्ति से भर जाए। उसने सुना था कि नगर के बाहर एक महान संत रहते हैं, जिनकी वाणी में अद्भुत प्रभाव है और जिनके आशीर्वाद से लोगों का जीवन बदल जाता है। यह सुनकर उसके मन में आशा की एक नई किरण जागी और वह संत के पास पहुंच गया। वह संत थे महान दार्शनिक सुकरात, जो अपने ज्ञान और सत्य के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध थे। वह व्यक्ति उनके चरणों में बैठ गया और विनम्र स्वर में बोला, "गुरुदेव, मुझे संपन्नता का आशीर्वाद दीजिए, ताकि मेरा जीवन सुख और समृद्धि से भर जाए।" संत ने उसकी ओर शांत दृष्टि से देखा, लेकिन कुछ नहीं कहा। वे केवल मुस्कुरा दिए और किसी अन्य विषय पर चर्चा करने लगे। वह व्यक्ति कुछ देर तक प्रतीक्षा करता रहा, फिर निराश होकर वापस लौट गया। लेकिन उसकी आशा खत्म नहीं हुई। वह अगले दिन फिर संत के पास पहुंचा और वही प्रार्थना दोहराई। संत ने इस बार भी उसे कोई आशीर्वाद नहीं दिया। उन्होंने केवल उसे धैर्य रखने की सलाह दी। यह सिलसिला कई दिनों तक चलता रहा। वह व्यक्ति बार-बार संत के पास जाता, आशीर्वाद मांगता, और हर बार बिना आशीर्वाद के लौट आता। उसके मन में सवाल उठने लगे कि आखिर संत उसे आशीर्वाद क्यों नहीं दे रहे।

धीरे-धीरे उसकी आर्थिक स्थिति और भी कमजोर होती गई। उसके पास कोई निश्चित काम नहीं था। वह दिनभर इधर-उधर भटकता और शाम को खाली हाथ लौट आता। उसके मन में निराशा घर करने लगी। उसे लगने लगा कि शायद उसका भाग्य ही खराब है। लेकिन एक दिन उसने अपने आसपास के लोगों को ध्यान से देखा। उसने देखा कि जो लोग मेहनत कर रहे हैं, वे धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे हैं। उनके जीवन में स्थिरता और संतोष है। यह देखकर उसके मन में एक नया विचार आया—शायद उसे भी कुछ करना चाहिए। उसने निश्चय किया कि वह फल बेचने का काम शुरू करेगा। उसने थोड़े से पैसे जुटाए और बाजार से कुछ ताजे फल खरीदे। उसने उन्हें एक टोकरी में सजाया और बाजार की ओर चल पड़ा। शुरू में उसे संकोच हुआ। उसे डर था कि लोग उसका मजाक उड़ाएंगे। लेकिन उसने अपने डर को पीछे छोड़ दिया और ग्राहकों को पुकारना शुरू किया। धीरे-धीरे कुछ लोगों ने उससे फल खरीदे। दिन के अंत में जब उसने अपनी मेहनत की कमाई अपने हाथ में ली, तो उसके मन में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ।

अब वह रोज फल बेचने जाने लगा। हर दिन उसकी हिम्मत बढ़ती गई। वह पहले से ज्यादा मेहनत करने लगा। उसने सीखा कि ग्राहकों से कैसे बात करनी चाहिए, कैसे अच्छे फल चुनने चाहिए, और कैसे ईमानदारी से व्यापार करना चाहिए। उसकी मेहनत रंग लाने लगी। उसकी आय बढ़ने लगी और उसका आत्मविश्वास भी मजबूत होने लगा।

एक दिन वह अपने सिर पर फलों की टोकरी लेकर बाजार जा रहा था। उसी रास्ते पर संत सुकरात आ रहे थे। संत ने उसे देखा और उसके पास आकर खड़े हो गए। उन्होंने उसकी ओर प्रेम से देखा और कहा, "तुम्हारा जीवन संपन्न हो, तुम्हारे प्रयास सफल हों।" यह सुनकर वह व्यक्ति आश्चर्यचकित रह गया। उसने तुरंत संत के चरणों में झुककर कहा, "गुरुदेव, मैं तो इतने दिनों से आपसे यही आशीर्वाद मांग रहा था, लेकिन आपने कभी नहीं दिया। आज आप स्वयं मुझे आशीर्वाद देने क्यों आए?"

संत ने मुस्कुराकर उत्तर दिया, "पहले तुम केवल आशीर्वाद पर निर्भर थे, अपने कर्म पर नहीं। तुम्हारे भीतर प्रयास की कोई इच्छा नहीं थी। बिना कर्म के आशीर्वाद वैसा ही है जैसे बिना बीज के खेत। उसमें कुछ भी नहीं उग सकता। लेकिन अब तुमने अपने हाथों से कर्म करना शुरू किया है। अब तुम्हारा परिश्रम ही वह भूमि है, जिसमें आशीर्वाद का बीज फल देगा।"

उनकी बात सुनकर उस व्यक्ति की आंखें नम हो गईं। उसे समझ में आ गया कि असली शक्ति आशीर्वाद में नहीं, बल्कि कर्म में होती है। आशीर्वाद केवल उस कर्म को दिशा देता है, लेकिन सफलता का निर्माण व्यक्ति स्वयं करता है।

उस दिन के बाद उसने अपने काम को और अधिक लगन से करना शुरू किया। उसने कभी भी केवल भाग्य पर भरोसा नहीं किया। उसने जाना कि भाग्य भी उसी का साथ देता है, जो स्वयं अपने कदम आगे बढ़ाता है। उसकी मेहनत ने धीरे-धीरे उसके जीवन को बदल दिया। अब वह पहले की तरह निराश नहीं रहता था। उसके चेहरे पर आत्मविश्वास की चमक थी।

समय बीतता गया और उसका जीवन सचमुच संपन्न हो गया। लेकिन अब उसकी सोच बदल चुकी थी। वह जान चुका था कि संपन्नता केवल धन का नाम नहीं है। सच्ची संपन्नता आत्मविश्वास, परिश्रम और आत्मसम्मान में होती है। उसने यह भी समझ लिया कि संत ने उसे पहले आशीर्वाद इसलिए नहीं दिया था, क्योंकि वे चाहते थे कि वह स्वयं अपने भीतर की शक्ति को पहचाने।

अब वह जब भी संत से मिलता, वह उनसे आशीर्वाद नहीं मांगता था। वह केवल उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता था। क्योंकि उसने समझ लिया था कि सबसे बड़ा आशीर्वाद वह ज्ञान है, जो व्यक्ति को अपने कर्म का महत्व समझा दे।

उसकी जीवन यात्रा एक प्रेरणा बन गई। लोगों ने उससे सीखा कि आशीर्वाद तभी फलता है, जब उसे कर्म का सहारा मिलता है। केवल इच्छा करने से कुछ नहीं बदलता, परिवर्तन तब होता है जब व्यक्ति स्वयं बदलने का साहस करता है। और यही वह सत्य है, जो हर युग में उतना ही प्रासंगिक है जितना उस समय था, जब एक साधारण व्यक्ति ने अपने कर्म से अपने भाग्य को बदल दिया।

विरोध के मंच और तरीके से कांग्रेस की साख पर सवाल

विरोध और मतभिन्नता लोकतंत्र का आभूषण होता है। लेकिन विरोध का तरीका क्या हो या फिर किस जगह पर हो, इसकी समझ होनी चाहिए। कांग्रेस देश की सबसे पुरानी पार्टी है। स्वाधीनता आंदोलन के साथ-साथ इतिहास के हर आगे बढ़ते पग के साथ कांग्रेस आगे बढ़ती रही है। विरोधी आंदोलन चलाने का स्वाधीनता के पहले उसका लंबा इतिहास रहा। आजादी के बाद सबसे ज्यादा वक्त शासन का अनुभव भी उसी के पास है। इस वजह से उससे लोकतांत्रिक विरोध के तरीकों और विरोध के लिए चुने जाने वाले मंचों को लेकर विशेष उम्मीद रखना बेमानी नहीं है। शायद यही वजह है कि इंडिया एआई इम्पैक्ट सम्मेलन में उसकी ओर से किए गए विरोध प्रदर्शनों को राष्ट्रीय समर्थन मिलता नहीं दिख रहा। पूर्व पत्रकार पवन खेड़ा जैसा प्रवक्ता 20 फरवरी के विरोध प्रदर्शन को चाहे जितना भी वाजिब ठहरा रहा हो, कांग्रेस की इस विरोध प्रदर्शन के लिए किरकिरी ही हो रही है। संसद से लेकर सड़क तक ज्यादातर मुद्दों पर भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ कांग्रेस का साथ देने वाले ज्यादातर विपक्षी दलों को भी युवा कांग्रेस का विरोध प्रदर्शन नहीं रूचा है। ज्यादातर विपक्षी दलों ने इस प्रदर्शन को अनुचित बताया है। अखिलेश यादव ने शायद सबसे गंभीर बात कही है। उन्होंने कहा है कि राजनीतिक मतभेद अपनी जगह हैं, लेकिन वैश्विक मंच पर ऐसा विरोध प्रदर्शन उचित नहीं था। अखिलेश यहीं तक नहीं रूके, उन्होंने कांग्रेस को एक तरह से नसीहत देते हुए कहा कि देश को विदेशी प्रतिनिधियों के सामने शर्मिंदा करने से बचना चाहिए। कांग्रेस के साथ हर मुमकिन मौके पर गलबहियां डालकर चलने वाले राष्ट्रीय जनता दल के राज्यसभा सदस्य मनोज झा ने भी एक तरह से कांग्रेस को उपदेश ही दिया है। मनोज झा का कहना है कि शिकायतें हो सकती हैं, लेकिन विरोध का तरीका बेहतर हो सकता है।

ऐसा नहीं कि भारतीय लोकतंत्र में विरोध की परंपरा नहीं रही है। भारतीय राजनीति के चिर विद्रोही कहे जाने वाले लोहिया ने विरोध करने का जो मुहावरा दिया, वह भारतीय राजनीति का सर्वस्वीकार्य रहा है। उन्होंने संसद से सड़क तक विरोध का तरीका बताया। लोहियावादी विरोध कई मायनों में आक्रामक ही कहा जाएगा। लेकिन विरोध कब और कहां किया जाना चाहिए, उसकी जगह क्या होनी चाहिए, इसे लेकर भी भारतीय राजनीति में आमराय रही है। विरोध के मंच ऐसे नहीं होने चाहिए, जिससे भारत की एक राष्ट्र के रूप में वैश्विक शर्मिंदगी उठानी पड़े। इस सूत्र वाक्य को भारतीय राजनीति अपनाती रही है। लेकिन नई दिल्ली के भारत मंडपम में बीस फरवरी को युवा कांग्रेस की ओर से किया गया विरोध प्रदर्शन इस सूत्र वाक्य का एक तरह से उल्लंघन ही माना जाएगा। शायद यही वजह है कि कांग्रेस के समर्थक और साथी दल इसकी आलोचना कर रहे हैं या फिर कांग्रेस को नसीहत दे रहे हैं।

जिस इंडिया एआई इम्पैक्ट सम्मेलन के मंच का इस्तेमाल युवा कांग्रेस ने नरेंद्र मोदी के विरोध के लिए किया, उसमें दुनिया भर के 118 देशों के सरकारी प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। 16 फरवरी से 21 फरवरी तक चले इस सम्मेलन में 22 देशों के शासनाध्यक्षों और मंत्री स्तर के 59 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन के बाद जो नई दिल्ली घोषणापत्र जारी किया गया, उस पर 88 देशों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने हस्ताक्षर करके अपनी सहमति जताई है। जिसमें अमेरिका, चीन, ब्रिटेन, फ्रांस और रूस जैसे प्रमुख देशों की भी भागीदारी है। इस सम्मेलन में 100 से अधिक वैश्विक स्तर के एआई नेता और 500 से अधिक स्टार्टअप्स ने भी शिरकत की। इस सम्मेलन की महत्ता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इस के घोषणा पत्र में अमेरिका और ब्रिटेन ने भी हस्ताक्षर किए हैं। इससे पहले पेरिस में हुए एआई वैश्विक सम्मेलन के बाद जारी घोषणा पत्र में अमेरिका और ब्रिटेन ने हस्ताक्षर नहीं किया था। जबकि पूरी दुनिया जानती है कि वैश्विक मामलों में फ्रांस, अमेरिका और ब्रिटेन एक ही खेमे के देश हैं। जाहिर है कि ऐसे मंच का महज प्रधानमंत्री के विरोध के लिए इस्तेमाल करना सही कदम नहीं माना जाएगा।

भले ही इस विरोध प्रदर्शन को मायावती भी अनुचित बता चुकी हों, वाईएसआर कांग्रेस के नेता जगनमोहन रेड्डी गलत बता चुके हों, फिर भी कांग्रेस द्वारा इसे वाजिब ठहराया जाना साबित करता है कि पार्टी के केंद्रीय ढांचे में उचित-अनुचित का भेद करने वाली शख्सियतों की कमी हो गई है। कांग्रेस के इस विरोध प्रदर्शन को विपक्षी खेमे में ही उसकी सत्ता से दूरी से उपजी हताशा को माना जा रहा है। लेकिन विपक्षी खेमा इसके लिए कांग्रेस के नेतृत्व को ही जिम्मेदार ठहराता है। कांग्रेस के कुछ अंदरूनी नेता भी मानते हैं कि राहुल गांधी की अगुआई वाली कांग्रेस के केंद्रीय घेरे में दूरगामी सोच वाले नेताओं की बहुत कमी हो गई है। इसलिए पार्टी में एकाधिकारवादी और बेपरवाह सोच हावी होती गई है। विपक्षी खेमे के साथ ही पार्टी के कुछ लोग मानते हैं कि अगर पिछले आम चुनाव से पहले नीतीश कुमार को राहुल की अगुआई वाली कांग्रेस ने अपना नेता मान लिया होता या फिर इंडिया गठबंधन का संयोजक स्वीकार कर लिया होता तो संभवतः देश का इतिहास कुछ और होता। इसकी वजह यह है कि नरेंद्र मोदी के बरक्स नीतीश कुमार ही ऐसे नेता हैं, जिनकी राष्ट्रव्यापी एक छवि है। नीतीश के पास बिहार के अतिरिक्त देश के दूसरे इलाके में जमीनी नेतृत्व और संगठन नहीं है। लेकिन उनकी पहचान पूरे देश में है और उनकी छवि भी विपक्षी खेमे के दूसरे नेताओं की तुलना में कहीं ज्यादा पाक-साफ है। मौजूदा कांग्रेस की कमी यह है कि वह अगले पल उठाए जाने वाले अपने हर कदम के परिणामों का आकलन राहुल गांधी की राजनिक सेहत के लिहाज से करती है।

अभियान

ब्रज में उतरा प्रेम का रंग, जब भगवान ने स्वयं खेली होली

ब्रजभूमि की पवित्र वायु में जैसे ही रंगभरी एकादशी का आगमन हुआ, पूरा वृन्दावन भक्ति और प्रेम के दिव्य रंगों में डूब गया। यह केवल एक तिथि नहीं थी, बल्कि वह पावन क्षण था जिसका इंतजार पूरे वर्ष किया जाता है। यह वही दिन है जब मंदिरों में भगवान स्वयं भक्तों के साथ होली खेलने की परंपरा निभाते हैं और भक्त अपने आराध्य के साथ उस प्रेम का अनुभव करते हैं, जो सांसारिक सीमाओं से परे होता है। सुबह होते ही मंदिरों के बाहर श्रद्धालुओं की लंबी कतारें लग गईं। हर व्यक्ति की आंखों में दर्शन की लालसा थी और हृदय में भक्ति का अथाह सागर उमड़ रहा था।

इस पावन अवसर का केंद्र बना बांके बिहारी मंदिर, जहां रंगभरी एकादशी के साथ ही होली उत्सव का शुभारंभ हुआ। मंदिर के द्वार खुलते ही वातावरण में घंटियों की मधुर ध्वनि गूंज उठी। सेवायतों ने विधि-विधान से भगवान का श्रृंगार किया और फिर वह क्षण आया जब भगवान बांके बिहारी ने प्रतीकात्मक रूप से राधा रानी के साथ होली खेली। यह दृश्य इतना अद्भुत था कि हर भक्त की आंखें उस दिव्य क्षण में खो गईं। केसर, गुलाब जल और टेसू के फूलों के अर्क से भरी पिचकारी से भगवान ने रंगों की पहली वर्षा की। टेसू के फूलों की सुगंध ने पूरे वातावरण को पवित्र बना दिया। यह सुगंध केवल हवा में नहीं थी, बल्कि हर भक्त के मन में समा गई थी। ब्रज की परंपराओं के अनुसार, होली का यह उत्सव द्वापर युग से चला आ रहा है। मान्यता है कि राधा रानी ने सबसे पहले भगवान कृष्ण के गालों पर रंग लगाया था। वही क्षण प्रेम और होली की शुरुआत का प्रतीक बना। आज भी उसी परंपरा को उसी श्रद्धा और विश्वास के साथ निभाया जाता है। यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि प्रेम और समर्पण की जीवंत अभिव्यक्ति है। जब भक्त इस परंपरा को देखते हैं, तो उन्हें ऐसा लगता है जैसे वे स्वयं उस युग का हिस्सा बन गए हों।

इस दिन भगवान बांके बिहारी को विशेष रूप से सफेद वस्त्र पहनाए जाते हैं। सफेद रंग पवित्रता, शांति और नई शुरुआत का प्रतीक होता है। यह परंपरा धुलंडी तक जारी रहती है, जब भगवान गुलाबी वस्त्र धारण करते हैं। सफेद से गुलाबी तक की यह यात्रा केवल वस्त्रों का परिवर्तन नहीं, बल्कि प्रेम की गहराई और भक्ति की परिपूर्णता का प्रतीक है। जब भगवान गुलाबी वस्त्र धारण करते हैं, तो वह क्षण प्रेम की पूर्णता का संकेत देता है।

पूरे वृन्दावन की गलियों में उस दिन भक्ति का अनूठा स्वर गूंज रहा था। 'आज बिरज में होली रे रसिया' जैसे पारंपरिक भजन हर ओर सुनाई दे रहे थे। ये भजन केवल संगीत नहीं, बल्कि भक्ति की आत्मा हैं। इनकी ध्वनि भक्तों के हृदय में प्रेम और आनंद का संचार करती है। इन भजनों की विशेषता यह है कि इन्हें केवल हिंदू कवियों ने ही नहीं, बल्कि मुस्लिम कवियों ने भी लिखा है, जो ब्रज की सांस्कृतिक एकता और सद्भाव का प्रतीक है।

मंदिरों में फूलों की होली का आयोजन भी हुआ। भक्तों ने गुलाब, गेंदे और अन्य सुगंधित फूलों से भगवान के साथ होली खेली। फूलों की वर्षा के बीच जब भक्त 'राधे-राधे' और 'श्याम-श्याम' का जयघोष कर रहे थे, तो ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो स्वयं प्रकृति भी इस उत्सव में सहभागी हो गई हो। हवा में उड़ते फूल और भक्ति के स्वर मिलकर एक ऐसा दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे, जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है।

इस दिव्य उत्सव में केवल स्थानीय श्रद्धालु ही नहीं, बल्कि देश और विदेश से आए भक्त भी शामिल हुए। राधा दामोदर मंदिर में विदेशी भक्तों की बड़ी संख्या ने इस उत्सव में भाग लिया। उन्होंने भगवान के साथ होली खेली और इस अद्भुत परंपरा का अनुभव किया। उनके चेहरे पर जो आनंद था, वह यह दर्शाता था कि भक्ति की कोई भाषा या सीमा नहीं होती।

इसी प्रकार राधा बल्लभ मंदिर में भी विशेष आयोजन किए गए। यहां ढोल, नगाड़ों और शंख की ध्वनि के साथ भव्य शोभायात्रा निकाली गई। यह शोभायात्रा पूरे नगर से होकर गुजरी और हर व्यक्ति को इस उत्सव का हिस्सा बनने का अवसर दिया। लोग अपने घरों से बाहर निकलकर भगवान के दर्शन करने लगे और इस दिव्य यात्रा में शामिल हो गए।

ब्रज की होली केवल रंगों का उत्सव नहीं है, बल्कि यह भगवान और भक्त के बीच प्रेम का उत्सव है। यहां रंग केवल शरीर पर नहीं, बल्कि आत्मा पर चढ़ता है। यहां होली खेलना केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक अनुभव है, जो व्यक्ति को भगवान के और करीब ले जाता है।

प्रशासन ने भी इस अवसर पर विशेष व्यवस्थाएं की थीं। श्रद्धालुओं की सुरक्षा और सुविधा के लिए पुलिस बल तैनात किया गया था। स्वास्थ्य सेवाओं की व्यवस्था की गई थी और यह सुनिश्चित किया गया था कि किसी भी श्रद्धालु को कोई परेशानी न हो। अधिकारियों ने यह भी निर्देश दिए थे कि केवल प्राकृतिक रंगों का ही उपयोग किया जाए, ताकि इस पवित्र उत्सव की शुद्धता बनी रहे।

इस उत्सव की सबसे विशेष बात यह है कि यहां होली केवल एक दिन नहीं, बल्कि कई दिनों तक मनाई जाती है। लड्डू होली, जलेबी होली और फूलों की होली जैसे विभिन्न आयोजन इस उत्सव को और भी अधिक भव्य बना देते हैं। हर आयोजन का अपना अलग महत्व और आकर्षण होता है, लेकिन रंगभरी एकादशी वह क्षण है, जब इस दिव्य उत्सव की शुरुआत होती है।

जब शाम का समय आया, तो मंदिरों में दीपों की रोशनी से वातावरण जगमगा उठा। भजन और कीर्तन की ध्वनि ने पूरे वातावरण को भक्ति से भर दिया। भक्त भगवान के चरणों में बैठकर भक्ति में लीन हो गए। उस समय ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो पूरा ब्रज भगवान के प्रेम में डूब गया हो।

वृन्दावन की होली केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि एक अनुभूति है। यह वह क्षण है, जब भक्त अपने भगवान के साथ एकाकार हो जाता है। यहां रंग केवल रंग नहीं होते, बल्कि प्रेम, भक्ति और समर्पण के प्रतीक होते हैं। जब कोई इस उत्सव का अनुभव करता है, तो वह केवल रंगों से नहीं, बल्कि भक्ति से भीग जाता है।

ब्रज की होली यह सिखाती है कि सच्चा आनंद बाहरी रंगों में नहीं, बल्कि भीतर की भक्ति में होता है। यह उत्सव हर वर्ष लोगों को भगवान के प्रेम का अनुभव कराता है और उन्हें जीवन की सच्ची खुशी का मार्ग दिखाता है। यही कारण है कि वृन्दावन की होली केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि एक जीवंत आध्यात्मिक अनुभव है, जो हर भक्त के हृदय में हमेशा के लिए बस जाता है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

गुजरात के शहरीजनों को मनोरंजक गतिविधियों के लिए वाइब्रेंट कम्युनिटी स्पेस प्रदान करने के लिए राज्य की महानगर पालिकाओं में विकसित होंगे थीम-आधारित 'नमो गौरव पार्क'

- राज्य सरकार ने 2026-27 के बजट में नमो गौरव पार्क के लिए शहरी विकास और शहरी आवास विभाग के तहत 20 करोड़ रुपए आवंटित किए
- 100 करोड़ रुपए के प्रस्तावित खर्च से बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, सभी आयु वर्ग के लोगों को आधुनिक और आकर्षक मनोरंजन सुविधाएं प्रदान की जाएंगी
- पार्क में सांस्कृतिक गतिविधियों, सामाजिक समारोहों और नियोजित कार्यक्रमों के आयोजन से शहरी समुदायों के बीच संबंध मजबूत होगा
- पौधरोपण, थीमैटिक ग्रीन लैंडस्केप्स और पर्यावरण-अनुकूल सुविधाओं से अर्बन इकोलॉजी में होगा सुधार

जीएनएस)। गांधीनगर : गुजरात के शहरी क्षेत्रों में अब विभिन्न आयु वर्ग के लोगों के लिए उच्च गुणवत्तापूर्ण मनोरंजन स्थलों की मांग बढ़ रही है। ऐसे वाइब्रेंट कम्युनिटी स्थल, जो मनोरंजन के साथ-साथ समग्र स्वास्थ्य और खुशहाली को भी बढ़ावा देते हैं। तेजी से हो रहे शहरीकरण के कारण शहरी इलाकों में रहने वाले लोगों के लिए मनोरंजक गतिविधियों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन के लिए खुले स्थान कम होते जा रहे हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात सरकार ने राज्य की महानगर पालिकाओं में थीम-आधारित 'नमो गौरव पार्क' विकसित करने का निर्णय किया है। ऐसे थीम-आधारित पार्क विकसित करने के लिए राज्य सरकार ने 2026-27 के बजट में शहरी विकास और शहरी आवास विभाग के अंतर्गत 20 करोड़ रुपए का आवंटन किया है। उल्लेखनीय है कि थीम-आधारित पार्क कई प्रकार की मनोरंजक गतिविधियों के लिए सुविधाएं प्रदान करते हैं, जिसमें खेल, फिटनेस और सांस्कृतिक गतिविधियां, पारिस्थितिकी (इकोलॉजी) और टेक्नोलॉजी-आधारित सुविधाएं शामिल हैं। ऐसे पार्क न केवल शहरी क्षेत्रों में रहने के माहौल को ज्यादा बेहतर बनाते हैं, बल्कि ग्रीन कवर को बढ़ाकर, जैव विविधता को प्रोत्साहन देकर और सूक्ष्म जलवायु परिस्थितियों में सुधार करके जलवायु संरक्षण में भी सहयोग करते हैं।

नमो गौरव पार्क विकसित करने के उद्देश्य

थीम-आधारित नमो गौरव पार्क विकसित करने का उद्देश्य शहरीजनों की मनोरंजन और सांस्कृतिक जरूरतों को पूरा करने वाले सुरक्षित, समावेशी और वाइब्रेंट कम्युनिटी स्थलों का निर्माण करना है। इस पहल के माध्यम से बच्चों, युवाओं और वरिष्ठ नागरिकों सहित सभी आयु वर्ग के लोगों को आधुनिक एवं आकर्षक मनोरंजन सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। साथ ही, इस पार्क में विभिन्न प्रकार की शारीरिक गतिविधियों के जोन बनाए जाएंगे, जो शारीरिक तंदुरुस्ती, मानसिक सेहत और स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देंगे। पार्क में सांस्कृतिक गतिविधियों, सामाजिक समारोहों और नियोजित कार्यक्रमों के आयोजन से शहरी समुदायों के बीच आपसी संबंध मजबूत होगा। इसके अलावा, इस पार्क को विकसित करने का एक उद्देश्य स्वच्छ पर्यावरण को प्रोत्साहन देना भी है। विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों को लगाने, थीमैटिक ग्रीन लैंडस्केप्स और पर्यावरण-अनुकूल सुविधाओं से अर्बन इकोलॉजी बेहतर होगी। यही नहीं, ग्रीन कवर में वृद्धि, जल संरक्षण और टिकाऊ इंफ्रास्ट्रक्चर को एकीकृत करके क्लाइमेट रेजिलिएंस यानी जलवायु के प्रति लचीलेपन में भी सुधार किया जाएगा। इस पार्क के निर्माण से शहरी जीवन की समग्र गुणवत्ता बेहतर होगी।

नमो गौरव पार्क में शामिल विभिन्न कंपोनेंट्स

नमो गौरव पार्क में विभिन्न प्रकार के कंपोनेंट्स प्रस्तावित किए गए हैं, जिनमें चिल्ड्रन प्ले जोन, थीम-आधारित लैंडस्केपिंग एंड ग्रीन जोन, फिटनेस एंड स्पोर्ट्स एरिया, मनोरंजक और सांस्कृतिक गतिविधि स्थल, जल निकाय और इको फ्रेंडली फीचर्स, सार्वजनिक सुविधाएं, सार्वभौमिक सुगम्यता तथा स्मार्ट पार्क फीचर्स शामिल हैं। चिल्ड्रन प्ले एरिया में बच्चों के लिए खेल के सामान होंगे, तो थीम-आधारित लैंडस्केपिंग एंड ग्रीन जोन में स्थानीय पेड़-पौधों और फूलों की क्यारियां तथा थीम-आधारित शिल्प एवं कलाकृतियां लगाई जाएंगी, साथ ही बटलफ्लाई गार्डन और हर्बल गार्डन आदि भी होंगे। फिटनेस एंड स्पोर्ट्स एरिया में ओपन जिम, जॉगिंग और वॉकिंग ट्रैक तथा बैडमिंटन, वॉलीबॉल जैसे खेलों के स्थान होंगे। मनोरंजक और सांस्कृतिक गतिविधि स्थल में ओपन एयर एम्फीथिएटर या प्रदर्शन के लिए स्टेज, योग और ध्यान के लिए लॉन बनाए जाएंगे। जल निकाय और पर्यावरण-अनुकूल फीचर्स में छोटे तालाब, फव्वारे, हरित क्षेत्रों के लिए टपक सिंचाई और वर्षा जल संचयन प्रणाली आदि विकसित किए जाएंगे। सार्वजनिक सुविधाओं और सार्वभौमिक सुगम्यता के अंतर्गत पेयजल की सुविधा, स्वच्छ सार्वजनिक शौचालय, बैठने के लिए बेंच और गजेबो तथा दिव्यांगों के लिए सुविधाजनक रास्ते बनाए जाएंगे। वहीं, स्मार्ट पार्क फीचर्स में सौर ऊर्जा से संचालित गार्डन, वाई-फाई की सुविधा, सेंसर-आधारित लाइटिंग सिस्टम और डिजिटल इन्फॉर्मेशन साइनेज आदि शामिल किए जाएंगे। ऐसे थीम-आधारित नमो गौरव पार्क का निर्माण राज्य सरकार द्वारा किए गए रणनीतिक शहरी निवेश को दर्शाता है, जो शहरी जीवन के पर्यावरणीय, मनोरंजन और सामाजिक-सांस्कृतिक परिमाणों को मजबूत करते हैं। यह पहल राज्य के समावेशी, जनोन्मुखी और जलवायु-लचीले शहरी विकास के विजन को समर्थन देती है, साथ ही महानगर पालिका क्षेत्रों में 'ईज ऑफ लिविंग' में भी सुधार करती है।

भावनगर रेलवे मंडल में पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु मैजिक एवं पपेट शो का सफल आयोजन

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के महिला कल्याण संगठन, भावनगर मंडल द्वारा सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहन देने की अपनी सतत पहल के अंतर्गत दिनांक 26 फरवरी, 2026 (गुरुवार) को भावनगर रेलवे कम्युनिटी हॉल में बच्चों एवं परिवारजनों हेतु मनोरंजक एवं रचनात्मक कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के मार्गदर्शन में पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन भावनगर मंडल की अध्यक्षा श्रीमती शालिनी वर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित पपेट शो एवं मैजिक शो ने अपनी उत्कृष्ट प्रस्तुति, रचनात्मकता तथा आकर्षक शैली से उपस्थित बच्चों एवं

दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया। दोनों प्रस्तुतियों को दर्शकों की ओर से अत्यंत सराहना प्राप्त हुई तथा पूरे कार्यक्रम के दौरान उत्साहपूर्ण वातावरण बना रहा। पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन भावनगर मंडल की अध्यक्षा श्रीमती शालिनी वर्मा ने पपेट शो के कलाकारों के उत्कृष्ट प्रदर्शन की प्रशंसा करते हुए उन्हें 2100/- का नगद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। इसी क्रम में प्रभावशाली एवं मनोरंजक मैजिक शो के कलाकारों को उनकी शानदार प्रस्तुति हेतु 4000/- का नगद पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन, भावनगर मंडल द्वारा संचालित किड्स हट्स एवं बाल मंदिर स्कूल के बच्चे, शिक्षकगण तथा महिला कल्याण संगठन की सदस्याओं की सक्रिय उपस्थिति रही। कार्यक्रम में बच्चों के अभिभावकों ने भी उत्साहपूर्वक सहभागिता की तथा आयोजन को अत्यंत सफल, प्रेरणादायक एवं बच्चों के समग्र विकास के लिए उपयोगी बताया।

भावनगर मंडल द्वारा इस प्रकार के आयोजन बच्चों में रचनात्मकता, आत्मविश्वास एवं सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा देने के साथ-साथ रेलवे परिवार के बीच आपसी समन्वय एवं सकारात्मक पारिवारिक वातावरण को सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का लक्ष्य भारत को 'सेमीकंडक्टर हब' बनाना : श्री अर्जुन मोढवाडिया, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री

- महात्मा मंदिर में 1 मार्च को आयोजित होगी 'गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस 2026' : श्री अर्जुन मोढवाडिया
- मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, केंद्रीय आईटी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की विशेष उपस्थिति

जीएनएस)। गांधीनगर : जब दुनिया कोविड-19 की चुनौतियों से जूझ रही थी, तब कुछ सेक्टरों की सप्लाई चेन विशेष रूप से प्रभावित हो गई थी, जिनमें सेमीकंडक्टर सेक्टर महत्वपूर्ण है। सेमीकंडक्टर का उत्पादन बंद होने से दुनिया के कई उद्योगों पर बुरा प्रभाव पड़ा। यह एक बड़ी चुनौती थी, इस चुनौती को एक अवसर मानते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश को सेमीकंडक्टर हब बनाने का निर्णय किया, जिसके परिणामस्वरूप आज देश सेमीकंडक्टर सहित 5वीं पीढ़ी की स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग में दुनिया का नेतृत्व कर रहा है। इस संबंध में गत सप्ताह नई दिल्ली में प्रधानमंत्री के नेतृत्व में इंडिया एआई इंपैक्ट समिट 2026 आयोजित हुई, जिसमें दुनिया के लगभग 88 देशों ने साथ मिलकर एआई के एथिकल (नैतिक) उपयोग के लिए घोषणापत्र जारी किया है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया ने शुक्रवार को गांधीनगर में आयोजित संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि गुजरात भी सेमीकंडक्टर उत्पादन के क्षेत्र में देश का हब बनने जा रहा है। राज्य में 1.24 लाख करोड़ रुपए अनुमानित लागत की सेमीकंडक्टर परियोजनाएं निर्माणाधीन हैं। श्री मोढवाडिया ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात भारत के अग्रणी सेमीकंडक्टर हब के रूप में उभर रहा है, जो भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादन और रणनीतिक टेक्नोलॉजी आधार को मजबूत बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसके अंतर्गत, आगामी 1 और 2 मार्च को गांधीनगर स्थित महात्मा मंदिर में 'गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस 2026' का आयोजन होगा। उन्होंने अधिक जानकारी देते हुए बताया कि इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, केंद्रीय सूचना एवं प्रौद्योगिकी (आईटी) मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी विशेष रूप से मौजूद रहेंगे।

श्री मोढवाडिया ने कहा कि यह महत्वपूर्ण उपलब्धि गुजरात को मेमोरी पैकेजिंग और उन्नत सेमीकंडक्टर उत्पादन के लिए एक मुख्य केंद्र के रूप में स्थापित करेगी। गुजरात सेमीकनेक्ट 2026 का आयोजन राज्य के फ्लैगशिप प्लेटफॉर्म के रूप में किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य वैश्विक और स्वदेशी सेमीकंडक्टर एवं इलेक्ट्रॉनिक्स भागीदारों को एक मंच पर इकट्ठा करना है। इस कॉन्फ्रेंस का उद्देश्य हाई-टेक चिप विनिर्माताओं, सप्लाई चेन भागीदारों और स्थानीय उद्योगों के बीच रणनीतिक सहयोग को सक्षम बनाकर गुजरात में सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम के दीर्घकालिक विकास को मजबूत करना है।

उन्होंने कहा कि इस वैश्विक कॉन्फ्रेंस का तीसरा संस्करण सेमीकनेक्ट 2024 और 2025 की मजबूत गति पर आधारित है, जिसने सेमीकंडक्टर वैल्यू चेन के प्रमुख हितधारकों- फैब्स, फाउंड्रीज, मुख्य उपकरण और सामग्री आपूर्तिकर्ताओं एवं अग्रणी डिजाइन इकोसिस्टम भागीदारों को सफलतापूर्वक एक मंच पर इकट्ठा किया था। पहले के संस्करणों ने एकीकृत बी2बी (बिजनेस-टू-बिजनेस) और बी2जी (बिजनेस-टू-गवर्नमेंट) बैठकों, टेक्नोलॉजी प्रदर्शनी और विषय-आधारित सत्रों के माध्यम से निवेश प्रोत्साहन, सप्लाई चेन विकास, नवाचार और प्रतिभा निर्माण में सार्थक साझेदारियों को सक्षम बनाया था। इस कॉन्फ्रेंस के लिए अब तक 8 से अधिक देशों से उद्योग प्रतिनिधियों, विदेशी संस्थानों, अनुसंधानकर्ताओं, नवोन्मेषकों, निवेशकों और विद्यार्थियों सहित 2500 से अधिक रजिस्ट्रेशन हो चुके हैं।

उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम में मुख्य निवेशकों की उपस्थिति भी रहेगी, जिनमें टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स के डॉ. रणधीर ठाकुर, माइक्रोन टेक्नोलॉजी के श्री संजय मेहरोत्रा, सीजी सेमी के श्री जी.सी. चतुर्वेदी, केन्स सेमीकॉन के श्री रमेश कुन्हीकन्नन और वैश्विक सेमीकंडक्टर उद्योग, उपकरण निर्माताओं एवं सप्लाई चेन का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्था सेमीकंडक्टर इक्विपमेंट एंड मैटेरियल्स इंटरनेशनल (सेमी) के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) श्री अजित मनोचा शामिल हैं।

श्री मोढवाडिया ने कहा कि इस कार्यक्रम के दौरान गुजरात के सेमीकंडक्टर और इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में नए निवेशों और कौशल विकास पहलों से जुड़ी घोषणाएं करने की योजना है।

कॉन्फ्रेंस में वैश्विक और भारतीय अग्रणी विशेषज्ञों के साथ केंद्रित पैनल सत्र आयोजित होंगे, जिनमें निम्न सत्र शामिल हैः-

पैनल 1 – 'नेक्स्ट जेन सेमीकंडक्टर्स'- रघु पणिकर (सीईओ, कन्स सेमीकॉन), हेम टेकर (वाइस प्रेसिडेंट (कॉर्पोरेट), माइक्रोन टेक्नोलॉजी) और वेंकट सिम्हाद्री (संस्थापक और प्रबंध निदेशक, एएसआईपी टेक्नोलॉजीज) जैसे मुख्य वक्ता इस बात पर चर्चा करेंगे कि गुजरात लीगेसी नोड्स से उन्नत सेमीकंडक्टर अनुसंधान एवं विनिर्माण में किस प्रकार परिवर्तन कर सकता है। वे कटिंग-एज टेक्नोलॉजी निवेश आकर्षित करने, स्थानीय क्षमताओं को मजबूत करने और डिजाइन, फैब्रिकेशन एवं सप्लाई चेन कार्यक्षमता में नवाचार के जरिए वैश्विक वैल्यू चेन में एकीकरण की भारत की संभावनाओं पर प्रकाश डालेंगे।

पैनल 2 – 'लॉजिस्टिक्स और इंफ्रास्ट्रक्चर'- विनायक पाई (सीईओ, टाटा प्रोजेक्ट्स) और ताकायोशी यूचियमी (क्षेत्रीय उप प्रमुख, निप्पॉन एक्सप्रेस) जैसे प्रतिष्ठित वक्ता धोलेरा एवं साणंद जैसे हब में सेमीकंडक्टर उत्पादन को समर्थन देने के लिए विश्व स्तरीय लॉजिस्टिक्स, मल्टीमॉडल कनेक्टिविटी और सुरक्षित सप्लाई चेन को सक्षम बनाने पर चर्चा करेंगे। यह पैनल बंदरगाहों की तैयारी, विशिष्ट परिवहन, ऊर्जा ढांचा और पाइपलाइन-आधारित लॉजिस्टिक्स जैसे उच्च-सूक्ष्म सेमीकंडक्टर कार्यों के लिए आवश्यक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करेगा।

पैनल 3 – 'सेमीकंडक्टर फाइनेंसिंग'- दीपेश शाह (कार्यकारी निदेशक, आईएफएससीए), अविचल खेड़ा (सीएफओ, गिफ्ट सिटी) और वी. बाला (सीईओ, एनएसई आईएक्स) जैसे प्रतिष्ठित महानुभाव बताएंगे कि कैसे गिफ्ट - आईएफएससी (गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंस टेक-सिटी – इंटरनेशनल फाइनेंस सर्विसेज सेंटर) भारत की सेमीकंडक्टर आशाओं के लिए वित्तीय शक्ति का केंद्र बन सकता है। विशेषज्ञ इस बात पर भी चर्चा करेंगे कि किस प्रकार वैश्विक पूंजी प्रवाह, नई वित्तीय व्यवस्थाएं, निवेश-अनुकूल विनियमन और आईएफएससी आधारित संस्थान बड़े पैमाने पर सेमीकंडक्टर फैब्स और इकोसिस्टम विकास को बढ़ावा दे सकते हैं।

पैनल 4 – 'अनुसंधान और वर्कफोर्स'- एस.डी. सुदर्शन (ईडी, सीडीएसी), डॉ. मदन मोहन त्रिपाठी (डीजी, एनआईईएलआईटी) और डॉ. रजत मूना (डीजी, आईआईटी-गांधीनगर) जैसे प्रतिष्ठित वक्ता सेमीकंडक्टर अनुसंधान, उन्नत कौशल विकास और मानव संसाधन निर्माण में भारत के क्षमतावर्धन पर ध्यान केंद्रित करेंगे। पैनल आरएंडडी संस्थानों, पाठ्यक्रम आधुनिकीकरण, उद्योग-शैक्षणिक सहयोग और विशिष्ट कुशलता मार्गों के महत्व को उजागर करेगा।

पैनल 5 – 'इलेक्ट्रॉनिक्स इकोसिस्टम'- अनुराग धूत (एमडी, एपिटोम), स्नेह शाह (निदेशक, एमट्रॉन इलेक्ट्रॉनिक्स) और विलियम ड्यू (सीएमओ, पोलराइस) जैसे मुख्य वक्ता पीसीबी उत्पादन से लेकर मजबूत घटक सप्लाई चेन तक भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स इकोसिस्टम को मजबूत बनाने के मुद्दों पर चर्चा करेंगे। वे स्थानीय क्षमताओं को बढ़ाने, आयात पर निर्भरता को कम करने और वैश्विक प्रतिस्पर्धी इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादन को सक्षम बनाने पर प्रकाश डालेंगे।

कॉन्फ्रेंस में अंतरराष्ट्रीय और उद्योग संबंधों को मजबूत करने के लिए निम्नलिखित उच्च स्तरीय बैठकें भी आयोजित होंगी :

ताइवान कंट्री राउंडटेबल : भारत की पहली व्यापारी सेमीकंडक्टर फैब्रिकेशन सुविधा और व्यापक इकोसिस्टम सहयोग के लिए टेक्नोलॉजी भागीदारी पर ध्यान केंद्रित।

जापान कंट्री राउंडटेबल : गुजरात में क्षमतावर्धन के लिए जापान के सुस्थापित अपस्ट्रीम सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम के साथ संवाद।

माइक्रोन इकोसिस्टम राउंडटेबल : स्थानीय वैल्यू चेन के निर्माण के लिए माइक्रोन के वैश्विक सप्लायर्स की भागीदारी।

वर्कफोर्स डेवलपमेंट एंड फ्यूचर स्किल्स 'फ्रॉम सिलिकॉन टू स्टूडेंट्स' सेमीकंडक्टर और इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में करियर मार्ग और कौशल विकास पर मार्गदर्शन।

इसके अलावा, वरिष्ठ उद्योग लीडरों एवं सरकारी अधिकारियों के बीच चुनिंदा वन-टू-वन बैठकें भी आयोजित होंगी।

इसके अतिरिक्त, 2 मार्च को प्रतिनिधिगण धोलेरा सेमीकॉन सिटी का दौरा करेंगे, जहां टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स और वरिष्ठ अधिकारी साथ बैठक करेंगे। आगंतुक धोलेरा के प्लग-एंड-प्ले औद्योगिक ढांचे, बिजली और पानी के सिस्टम, लॉजिस्टिक्स तैयारियों और सेमीकंडक्टर से संबंधित चल रहे विकास का सीधा अनुभव करेंगे।

कॉन्फ्रेंस को वैश्विक और राष्ट्रीय ज्ञान भागीदारों का मजबूत समर्थन मिला है, जिनमें सेमीकंडक्टर इक्विपमेंट एंड मैटेरियल्स इंटरनेशनल (सेमी), जापान एक्सटर्नल ट्रेड ऑर्गनाइजेशन (जेट्रो-जापान), कोरिया व्यापार-निवेश संवर्धन एजेंसी (कोटरा-कोरिया), इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन (आईएसएम), इलेक्ट्रॉनिक्स इंडस्ट्रीज एसोसिएशन ऑफ इंडिया (ईएलसीआईएनए), इंडिया सेल्यूलर एंड इलेक्ट्रॉनिक्स एसोसिएशन (आईसीईए), मोबाइल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स डिवाइसेज एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल (एमईडीईपीसी) और इन्वेस्ट इंडिया शामिल हैं।

इस कॉन्फ्रेंस में यू योशिदा सेन (डीजी, जेट्रो, अहमदाबाद), श्री किम (निदेशक, कोटरा, अहमदाबाद) और श्री होमर चांग (डीजी, टीईसीसी, मुंबई) भी मौजूद रहेंगे। गुजरात सेमीकनेक्ट 2026 राज्य में सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम को और मजबूत बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा।

गुजरात का हंसलपुर प्रोजेक्ट बना वैश्विक बेंचमार्क: भारतीय रेलवे ने ऑटोमोबाइल लॉजिस्टिक्स में 10 वर्षों में दर्ज की 20 गुना वृद्धि

जीएनएस)। विश्व स्तर पर ऑटोमोबाइल परिवहन में रेल एक तेज़ी से उभरता हुआ माध्यम बन रहा है। सड़क, रेल और समुद्री परिवहन के बीच संतुलन बनाते हुए कई देश अब कम लागत, कम कार्बन उत्सर्जन और उच्च दक्षता के कारण रेल आधारित लॉजिस्टिक्स को प्राथमिकता दे रहे हैं। भारत में भी यही परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है।

सड़क परिवहन पर अत्यधिक निर्भरता को कम करते हुए, भारतीय रेल (विशेषकर अहमदाबाद रेल मंडल) ने कारों के परिवहन में अपनी हिस्सेदारी पिछले एक दशक में 1% से बढ़ाकर 24% से अधिक कर दी है।

1. भारत में रेल से कार ट्रांसपोर्टः एक दशक का तुलनात्मक विश्लेषण

भारत में पहले अधिकांश कारों का परिवहन सड़क मार्ग (ट्रकों) से होता था, लेकिन पिछले दस वर्षों में भारतीय रेलवे ने Rail-based Automobile Transport के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है।

2013 से पहले की स्थिति (लगभग 2010–2013)

- रेल हिस्सेदारी (Rail Share): लगभग 1% से 1.5%
- सड़क हिस्सेदारी (Road Share): लगभग 98%
- सालाना परिवहनः लगभग 40,000 – 60,000 कारें प्रति वर्ष।
- मुख्य बाधाएँ: सीमित ऑटोमोबाइल वैगन, निजी रेलवे साइडिंग का अभाव और कंपनियों की ट्रकों पर निर्भरता। उस समय मारुति सुजुकी जैसी दिग्गज कंपनियाँ भी सड़क मार्ग को ही प्राथमिकता देती थीं।

वर्तमान स्थिति (2023–2025)

- रेल हिस्सेदारीः 20% से 24% तक।
- रेल से परिवहनः लगभग 10 लाख (1 मिलियन) से अधिक कारें प्रति वर्ष।
- वृद्धिः 2013 के मुकाबले लगभग 20 गुना की ऐतिहासिक वृद्धि।
- विकास की समयरेखा (Growth Timeline)

वर्ष
- रेल हिस्सेदारी (Rail Share)
- रेल से परिवहन की गई कारें
- 2010
- ₹1%
- ₹40,000
- 2013
- ₹1.5%

- ₹60,000
- 2016
- ₹5%
- ₹1.5 लाख
- 2019
- ₹10%
- ₹3 लाख
- 2022
- ₹18%
- ₹7 लाख
- 2024–25
- ₹20–24%
- 10 लाख+
- इस अभूतपूर्व वृद्धि के मुख्य कारण

1.AFTO योजनाः 'ऑटोमोबाइल फ्रेट ट्रेन ऑपरेटर' योजना के तहत निजी कंपनियों को विशेष वैगन चलाने की अनुमति दी गई।

2.आधुनिक वैगन (NMGH & BCACBM): विशेष रूप से डिजाइन किए गए ये वैगन एक ही ट्रेन में 250–300 कारों को ले जाने में सक्षम हैं।

3.इन-प्लांट साइडिंग्सः गुजरात (हंसलपुर), मानेसर और चेन्नई जैसे ऑटोमोबाइल हब में सीधे प्लांट तक रेलवे लाइन बिछाई गई।

4.किफायती एवं हरितः सड़क के मुकाबले रेल परिवहन 15–20% सस्ता है और इसमें 60–70% कम कार्बन उत्सर्जन होता है।

SIAM के अनुसारः भारत में हर साल लगभग 45–50 लाख कारों का उत्पादन होता है। रेलवे का लक्ष्य 2030 तक अपनी हिस्सेदारी को 35% तक ले जाना है।

गुजरात रेल प्रोजेक्टः अहमदाबाद रेल मंडल के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद रेल मंडल के अंतर्गत हंसलपुर (गुजरात) स्थित प्लांट रेलवे साइडिंग प्रोजेक्ट अब एक वैश्विक बेंचमार्क बन चुका है। यह प्रोजेक्ट 'Verra Carbon Standard' के तहत दुनिया का पहला "Modal Shift Transportation Project" घोषित हुआ है।

यह उपलब्धि अहमदाबाद मण्डल के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण और गौरवपूर्ण है।

i. रेल आधारित लॉजिस्टिक्स को बढ़ावा

गुजरात के हंसलपुर स्थित यह रेलवे साइडिंग अहमदाबाद मंडल के अंतर्गत संचालित रेल नेटवर्क से जुड़ी है। इसके माध्यम से बड़ी संख्या में वाहनों का परिवहन रेल द्वारा संभव हुआ है, जिससे रेलवे की माल ढुलाई क्षमता, दक्षता एवं उपयोगिता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

ii. पर्यावरण संरक्षण में रेलवे की भूमिका मजबूत

- पर्यावरणीय लाभः इस परियोजना से लगभग 1.7 लाख टन CO उत्सर्जन में कमी का अनुमान है।
- राजस्व वृद्धिः इससे अहमदाबाद मंडल के माल ढुलाई राजस्व में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है।
- दक्षताः रेल परिवहन, सड़क की तुलना में 15–20% सस्ता तथा 60–70% कम कार्बन उत्सर्जन वाला माध्यम है।

iii. प्रधानमंत्री गति शक्ति एवं मल्टी-मोडल कनेक्टिविटी को बढ़ावा

यह परियोजना PM GatiShakti के अंतर्गत विकसित मल्टी-मोडल अवसंरचना का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें रेलवे लॉजिस्टिक्स की केंद्रीय एवं प्रभावी भूमिका है। इससे औद्योगिक क्षेत्रों को तेज, सुगम और एकीकृत कनेक्टिविटी प्राप्त होती है।

iv. माल ढुलाई राजस्व एवं परिचालन दक्षता में वृद्धि

औद्योगिक रेलवे साइडिंग से—

- रेलवे के माल राजस्व (Freight Revenue) में वृद्धि होती है।
- सड़कों पर यातायात दबाव कम होता है।
- लॉजिस्टिक्स अधिक तेज, सुरक्षित एवं विश्वसनीय बनता है।

v. अहमदाबाद मंडल के लिए मॉडल प्रोजेक्ट

यह परियोजना भविष्य में अन्य औद्योगिक इकाइयों के लिए भी प्रेरणास्रोत सिद्ध होगी। इससे अहमदाबाद रेल मंडल में और अधिक प्राइवेट फ्रेट टर्मिनल एवं रेलवे साइडिंग के विकास की संभावनाएं सुदृढ़ होंगी, जिससे क्षेत्रीय औद्योगिक विकास को नई गति मिलेगी।

3. नीतिगत सुधारः सफलता के मुख्य आधार

भारतीय रेलवे ने उद्योग के साथ सतत संवाद एवं AFTO (Automobile Freight Train Operator) योजना में महत्वपूर्ण सुधार किए:

- न्यूनतम शर्तों में राहतः रेक की न्यूनतम संख्या 3 से घटाकर 1 की गई तथा पंजीकरण शुल्क 5 करोड़ से घटाकर शून्य किया गया।
- आधुनिक वैगनः NMGH और BCACBM जैसे विशेष वैगनों की तैनाती, जो एक ट्रेन में 250–300 कारें ढो सकते हैं।

गतिशक्ति कार्गो टर्मिनल (GCT): देशभर में 108 GCT कमीशन किए जा चुके हैं, जिनमें 8,049 करोड़ का निवेश हुआ है।

नए लोडिंग स्टेशनः चपानेर, चरोडी (WR), नासराला (NR), पेनुकोंडा (SWR) और पूर्वोत्तर (NFR) सहित कई नए स्टेशनों को जोड़ा गया।

2013 तक रेल की हिस्सेदारी केवल 1% थी, जो आज 20 गुना बढ़कर 24% से अधिक हो चुकी है। यह प्रधानमंत्री गतिशक्ति कार्यक्रम और रेलवे की उद्योग-अनुकूल नीतियों का परिणाम है। अहमदाबाद रेल मंडल के लिए यह उपलब्धि न केवल राजस्व वृद्धि का प्रतीक है, बल्कि 'ग्रीन लॉजिस्टिक्स' की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी है।

सड़क से रेल की ओर यह 'मोडल शिफ्ट' आर्थिक रूप से लाभकारी होने के साथ-साथ पर्यावरण के अनुकूल भी है। अहमदाबाद रेल मंडल के नेतृत्व में गुजरात के ऑटोमोबाइल हब अब वैश्विक स्तर पर 'ग्रीन लॉजिस्टिक्स' के मॉडल के रूप में उभर रहे हैं।

पश्चिम रेलवे द्वारा 1 मार्च 2026 को चर्चगेट और मुंबई सेंट्रल के बीच जम्बो ब्लॉक

जीएनएस)। आवश्यक अनुरक्षण कार्य हेतु अप एवं डाउन स्लो लाइनों पर पाँच घंटे का ब्लॉक पश्चिम रेलवे द्वारा रविवार, 1 मार्च 2026 को ट्रैक, सिगनलिंग प्रणाली तथा ओवरहेड उपकरणों के अनुरक्षण हेतु चर्चगेट और मुंबई सेंट्रल स्टेशनों के बीच अप एवं डाउन स्लो लाइनों पर जम्बो ब्लॉक लिया जाएगा। यह ब्लॉक 10:35 बजे से 15:35 बजे तक कुल पाँच घंटे का होगा। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ब्लॉक अवधि के दौरान स्लो लाइन की सभी ट्रेनें चर्चगेट और मुंबई सेंट्रल स्टेशनों के बीच फास्ट लाइनों पर चलाई जाएँगी। इसके अलावा, कुछ अप एवं डाउन उपनगरीय सेवाएँ निरस्त रहेंगी, जबकि चर्चगेट की ओर जाने वाली कुछ ट्रेनों को बांद्रा/दादर पर ही शॉर्ट-टर्मिनेट कर वहीं से रिटर्न चलाया जाएगा। प्रभावित ट्रेनों की विस्तृत सूची उपनगरीय खंड के सभी स्टेशनों पर स्टेशन मास्टरों के पास उपलब्ध रहेगी।

पश्चिम रेल्वे द्वारा साबरमती ⇌ दानापुर के बीच स्पेशल ट्रेन चलाई जाएगी

ट्रेन क्र.	प्रस्थान स्टेशन और गंतव्य	सेवा के दिन	प्रस्थान	आगमन
09427	साबरमती - दानापुर	01.03.2026	08:50 बजे (रविवार)	17:30 बजे (दूसरे दिन)
09428	दानापुर - साबरमती	02.03.2026	22:40 बजे (सोमवार)	06:45 बजे (बुधवार)

होल्टः महेसाणा, पालनपुर, आबू रोड, मारवाड़, अजमेर, जयपुर, दौसा, भरतपुर, टूंडला, इटावा, कानपुर सेंट्रल, प्रयागराज, मिर्ज़ापुर, पं. दीन दयाल उपाध्याय, बक्सर और आरा स्टेशन दोनों तरफ़ से।

कंपोज़िशन: AC3-टियर, स्लीपर क्लास और जनरल सेकंड क्लास कोच।

समय, ठहराव और संरचना के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए, यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जा सकते हैं।

ट्रेन नंबर 09427 के लिए बुकिंग सभी PRS काउंटर और IRCTC वेबसाइट पर खुली है। ऊपर बताई गई ट्रेन स्पेशल ट्रेन के तौर पर स्पेशल किराए पर चलाई जाएगी

पश्चिम रेलवे
wr.indianrailways.gov.in

हमें लाइक और फॉलो करें
facebook.com/WesternRly
X.com/WesternRly
Instagram.com/WesternRly
https://www.youtube.com/@WesternRly
https://bit.ly/WesternRailwayOfficial

कृपया सभी आरक्षित टिकटों के लिए मूल पहचान पत्र साथ रखें

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार

गुजरात बना देश का सेमीकंडक्टर हब

साणंद बनेगा देश में सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री का प्रवेश द्वार

भारत का 'सेमीकंडक्टर फैब फ्रंटियर' बनेगा धोलेरा SIR

निवेश में सबसे आगेः गुजरात ने सेमीकंडक्टर सेक्टर में लगभग ₹1.24 लाख करोड़ की परियोजना लागत वाले उद्योगों को आकर्षित किया है, जो भारत की कुल स्वीकृत सेमीकंडक्टर परियोजना लागत का लगभग 75% से अधिक है।

साणंद- ATMP/OSAT हबः माइक्रोन (₹22,516 करोड़), CG सेमी (₹7,600 करोड़) और केन्स टेक (₹3,300 करोड़) जैसी बड़ी कंपनियों के साथ साणंद देश का सबसे बड़ा ATMP/OSAT हब बनने जा रहा है।

धोलेरा SIR में भारत का प्रथम फैबः टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स द्वारा ₹91,526 करोड़ के परियोजना लागत से धोलेरा SIR में भारत का पहला कमर्शियल फैब स्थापित किया जा रहा है, जिसकी क्षमता हर महीने 50,000 चिप्स बनाने की होगी।

रोजगार के अवसरः राज्य में 50,000 से अधिक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर सृजित होंगे।

मुख्य विशेषताएँः

देश में प्रथम राज्यः गुजरात सेमीकंडक्टर नीति घोषित करने वाला देश का पहला राज्य है, जो सेमीकंडक्टर कंपनियों को सभी संभव प्रोत्साहन और सुविधाएँ प्रदान करता है।

नेक्स्ट-जेन टेकः धोलेरा SIR भारत के 'फैब फ्रंटियर' के रूप में उभर रहा है। टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स के विशाल प्लांट में 28 नैनोमीटर की चिप्स का उत्पादन होगा, जो भारत के औद्योगिक इतिहास में नया अध्याय लिखेगा।

आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चरः धोलेरा SIR की विशाल भूमि, 24X7 पानी और गैस ग्रिड की सुविधा और आगामी अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट इसे भविष्य के लिए 'सेमीकंडक्टर-रेडी' स्मार्ट सिटी के रूप में स्थापित करेंगे।

दक्ष कार्यबल : राज्य की 118 इंजीनियरिंग कॉलेजों और 16 विश्वविद्यालयों से हर साल निकलने वाले 50,000 से अधिक इंजीनियरों को सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री के लिए तैयार करने हेतु SAMARTH और ChipIN जैसे अत्याधुनिक प्रशिक्षण मॉडल विकसित किए जा रहे हैं।

कौशल विकासः IIT गांधीनगर में ₹194.21 करोड़ की लागत से कार्यरत 'SAMARTH' प्रोजेक्ट के तहत अगले 5 वर्षों में 2,600 से अधिक विशेषज्ञ इंजीनियर तैयार किए जाएंगे।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी विजन से गुजरात ने सेमीकंडक्टर सेक्टर में नया इतिहास रचा है।

गुजरात को वैश्विक स्तर पर सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग के बेस्ट डेस्टिनेशन के रूप में स्थापित करने के लिए हम प्रतिबद्ध हैं। स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप्स के माध्यम से गुजरात को भारत के सिलिकॉन इंडस्ट्री का प्रवेश द्वार बनाएंगे।

- **श्री हर्ष संघवी,** माननीय उपमुख्यमंत्री, गुजरात